UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 06 | April - June 2018

प्राकृतिक संसाधन: अर्थ और वर्गीकरण

PINKI

pinkihooda2809@gmail.com

सार

मानव जीवन का अस्तित्व, प्रगति एवं विकास संसाधनों पर निर्भर करती है । आदिकाल से मनुष्य प्रकृति से विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ प्राप्त कर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करता रहा है। वास्तव में संसाधन वे हैं जिनकी उपयोगिता मानव के लिये हो । कोई भी जैविक एवं अजैविक पदार्थ तब तक संसाधन नहीं बन सकता, जब तक वह मानव के लिये उपयोगी न हो, अर्थात् वे पदार्थ या वस्तुएँ या ऊर्जा जो मानव की सहायता के लिये या किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिये प्रयोग किये जाते हैं, संसाधन कहलाते हैं । संसाधनों के साथ उनकी उपयोगिता एवं कार्यात्मकता जुड़ी हुई है ।

मुख्य शब्द: अस्तित्व, आदिकाल, पदार्थ, मानव, संसाधन आदि ।

प्रस्तावना

संसाधन एक ऐसी प्राकृतिक और मानवीय सम्पदा है, जिसका उपयोग हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में करते हैं। दूसरे शब्दों में मानवीय-जीवन की प्रगति, विकास तथा अस्तित्व संसाधनों पर निर्भर करता है। प्रत्येक प्राकृतिक संसाधन मानव-जीवन के लिये उपयोगी है, किंतु उसका उपयोग उपयुक्त तकनीकी विकास द्वारा ही संभव है। भूमि, सूर्यातप, पवन, जल, वन एवं वन्य प्राणी मानव-जीवन की उत्पत्ति से पूर्व विद्यमान थे। इनका क्रमिक विकास तकनीकी के विकास के साथ ही हुआ। इस प्रकार मनुष्य ने अपनी आवश्यकतानुसार संसाधनों का विकास कर लिया है। स्पष्ट है कि पृथ्वी पर विद्यमान तत्वों को, जो मानव द्वारा ग्रहण किये जाने योग्य हो, संसाधन कहते हैं। जिम्मरमैन ने लिखा है कि, संसाधन का अर्थ किसी उद्देश्य की प्राप्ति करना है, यह उद्देश्य व्यक्तिगत आवश्यकताओं तथा समाजिक लक्ष्यों की स्तुति करना है। इस पृथ्वी पर कोई भी वस्तु संसाधन की श्रेणी में तभी आती है जब वह निम्नलिखित दशाओं में खरी उतरती है-

(1) वस्तु का उपयोग संभव हो।

(2) इसका रूपान्तरण अधिक मूल्यवान तथा उपयोगी वस्तु के रूप में किया जा सके।

(3) जिसमें निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति की क्षमता हो।

(4) इन वस्तुओं के दोहन की योग्यता रखने वाला मानव संसाधन उपलब्ध हो।

(5) संसाधनों के रूप में पोषणीय विकास करने के लिये आवश्यक पूँजी हो।

प्राकृतिक संसाधनों का वर्गीकरण

प्रकृति में विभिन्न प्रकार के संसाधन पाये जाते हैं, जिनके निर्माण का मूल स्रोत प्रकृति है तथा ये सभी मानवीय प्रभाव से नवीन स्वरूप में स्थापित हो जाते हैं। इस प्रकार प्रकृति मानव के लिये संसाधनों का निर्माण करती हैं जिनको मानव अपने प्रयासों, इच्छाओं और तकनीकी दक्षता से अपने उपयोग योग्य बनाता है लेकिन इसका वास्तविक भौतिक आधार तो प्रकृति प्रदान करती है। मनुष्य अपने वातावरण से संसाधनों का दोहन करके आर्थिक तंत्र को मजबूत करता है। वह भौतिक वातावरण को परिवर्तित करता रहता है जो उसकी रुचि, कौशल तथा शक्तियों पर निर्भर करता है। लेकिन मानव द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण में परिर्वतन की एक सीमा होती है जिसके बाहर जाने पर संसाधनों के सृजन के स्थान पर ह्रास प्रारम्भ हो जाता है।

मानव द्वारा प्रकृति में विद्यमान संसाधनों को अपने उपयोग में लेकर उद्देश्य पूर्ति को विकास का आधार माना जाता है। मनुष्य इनका दोहन प्राचीनकाल से करता आ रहा है। धीरे-धीरे इनके तीव्र दोहन से संध्रतया पोषणीय विकास की आवश्यकता महसूस की जाने लगी तथा वर्तमान समय में इनके आनुपातिक उपयोग हेतु इन्हें वर्गीकृत कर योजना बनाई जाने लगी है। संसाधन अनेक प्रकार के होते हैं जिनके वर्गीकरण के आधार भी भिन्न-भिन्न हैं। स्वामित्व की दृष्टि से संसाधन तीन प्रकार के होते हैं, जो क्रमशः व्यक्तिगत, राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय है।

धरातल पर उपलब्धता उन्हीं दृष्टि से चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। प्रथम-सर्वत्र उपल संसाधन जैसे- वायु, द्वितीय-सामान्य रूप से उपलब्ध संसाधन जैसे-कृषि भूमि, मृदा चारागाह भूमि आदि, तृतीय-सीमित उपलब्धता वाले संसाधन जैसे-यूरेनियम, सोना आदि चतुर्थ-संकेन्द्रित संसाधन-जो संसाधन केवल कुछ ही स्थानों पर मिलते हैं। जैसे केरल तट पर थोरियम आदि। उपरोक्त वर्गीकरण से स्पष्ट है कि किसी भी संसाधन को किसी वर्ग विशेष में रखा जाए यह इस तथ्य पर निर्भर करता है कि आप उसे किस दृष्टि में देखते हैं। विभिन्न सर्वमान्य आधारों पर संसाधनों का वर्गीकरण निम्न रूपों में किया जा सकता है-

I) उपयोग की सततता पर आधारित वर्गीकरण

(1) नवीकरणीय या नव्यकरणीय संसाधन

(2) अनवीनीकरण या अनवीकरणीयसंसाधन

(3) चक्रीय संसाधन

II) उत्पत्ति के आधार पर वर्गीकरण

(1) अजैविक संसाधन

(2) जैविक संसाधन

III) उद्देश्य पर आधारित वर्गीकरण

(1) ऊर्जा संसाधन

(2) कच्चा माल

(3) खाद्य पदार्थ

प्राकृतिक संसाधन एवं संबद्ध समस्याएँ

21वीं शताब्दी में मानव एक विचित्र अन्तर्द्वन्द्व में उलझ गया है जहाँ एक ओर तीव्र गति से बढ़ रही जनसंख्या के सामने खाद्य समस्या एवं संसाधनों की उपलब्धता की समस्या है तो दूसरी ओर निरंतर हो रहे संसाधनों के मात्रात्मक एवं गुणात्मक ह्रास की समस्या उत्पन्न हो गई है। वातावरण घटता जा रहा है, भूमि संसाधन का अवनयन एवं कृषि उत्पादों में कम, जल संसाधनों की उपलब्धता में कमी आदि समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। आज अधिकाधिक खाद्यान्न उत्पादन के लिये भूमि की उत्पादकता में वृद्धि एवं सिंचित क्षेत्रों में विस्तार की आवश्यकता है लेकिन दूसरी ओर सिंचित भूमि में जल प्लावन तथा लवणीयता की समस्या उद्भूत से उर्वर भूमि संकुचित हो रही है। ईंधन आपूर्ति के प्रयासों का प्रभाव खाद्य आपूर्ति पर दृष्टिगत हो रहा है। इस प्रकार संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाना ही दूसरे रूप में संसाधन संकट का रूप ले रही है। आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये प्रकृति में विभिन्न परिवर्तन किये गये जो तत्कालीन पर्यावरणीय दशाओं के सन्दर्भ में अनुकूल माने गये लेकिन कालान्तर में ये विकास कार्य ही समस्याएँ बन गई। प्रारम्भ में कृषि विकास के लिये तीव्र वनोन्मूलन किया गया। विभिन्न सिंचाई परियोजनाओं के विकास के लिये भी बड़े पैमाने पर वनावरण में कमी की गई, जिसे आज तक पुनः संतुलित नहीं किया जा सका है। जल संसाधनों अविवेकपूर्ण दोहन किया गया जिससे उनकी मात्रा में कमी के साथ ही प्रदूषण से गुणात्मक ह्रास भी हो गया फलस्वरूप मानव जाति के लिये जल संसाधनों की उपलब्धता घटी है। स्पष्ट है वन, जल, खनिज, खाद्य, ऊर्जा तथा भूमि संसाधनों का विगत शताब्दी में विभिन्न आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये अति दोहन किया गया। फलस्वरूप इनकी उपलब्धता में कमी आयी इस कमी ने समस्या का रूप ले लिया है।

सारांश

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 06 | April - June 2018

संसाधनों का वर्गीकरण उपयोग की सततता, उत्पत्ति के आधार व उद्देश्य के आधार पर किया गया है। संसाधनों पर अन्तरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय व व्यक्तिगत स्वामित्व होता है। वनों का अतिदोहन के कारण जलवायु, मृदा अपरदन व जैव विविधता का ह्रास हो रहा है। भूजल के स्रोत आकाशी, सहजात जल एवं मैग्मा जल है। जल का उपयोग सिंचाई, उद्योगों, घरेलू कार्यों, नौ परिवहन, नहरों व जल विद्युत में हो रहा है।

संदर्भ ग्रथ सूची:

1. जलग्रहण मार्गदर्शिका - संरक्षण एवं उत्पादन विधियों हेतु दिशा निर्देश - जलग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण विभाग द्वारा जारी
2. जलग्रहण विकास हेतु तकनीकी मैनुअल - जलग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण विभाग द्वारा जारी
3. कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी राष्ट्रीय जलग्रहण विकास परियोजना के लिये जलग्रहण विकास पर तकनीकी मैनुअल
4. वाटरशेड मैनेजमेंट - श्री वी.वी. ध्रुवनारायण, श्री जी. शास्त्री, श्री वी. एस. पटनायक
5. ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा जारी जलग्रहण विकास - दिशा निर्देशिका
6. ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा जारी जलग्रहण विकास - हरियाली मार्गदर्शिका
7. Compendium of Circulars जलग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण विभाग द्वारा जारी
8. विभिन्न परिपत्र - राज्य सरकार 7 जलग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण विभाग
9. Environmental Studies डॉ. के. के. सक्सेना
10. पर्यावरण अध्ययन - डॉ. राजकुमार गुर्जर, डॉ. बी.सी. जाट
11. A Text book of Environmental Education डॉ. जेपीयादव
12. कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वरसा जन सहभागिता मार्गदर्शिका